P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

परिवहन का कृषि विकास पर प्रभाव : गढ़वाल मण्डल का एक प्रतीक अध्ययन

कृष्ण गोपाल
सहायक प्राध्यापक,
भूगोल विभाग,
डॉ0 भीमराव अम्बेडकर
विश्वविद्यालय,
आगरा, उ0 प्र0 भारत

सारांश

कौन–सा क्षेत्र कितना विकसित है कितना अविकसित है कितना सभ्य है कितना असभ्य है इसका अनुमान वहाँ पर उपलब्ध परिवहन सुविधाओं से लगता है। जहाँ के परिवहन साधन जितने उन्नत एवं कम व्यय वाले होंगे, वहाँ की कृषि व्यापार, औद्योगिक एवं वाणिज्यक विकास के साथ–साथ अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध भी उतना ही विकसित और समृद्ध होते हैं। किसी भी देश की अर्थप्रणाली में कृषि और उद्योग शरीर है तो परिवहन शिरायें एवं धमनियाँ।

अध्ययन क्षेत्र गढ़वाल मण्डल पर्वतीय क्षेत्र है तो यहाँ पर कृषि योग्य भूमि कम है। गढ़वाल मण्डल में कुल प्रतिवेदित क्षेत्र 3403949 वर्ग हेक्टेयर क्षेत्रफल है जिसमें से शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल 395745 वर्ग हेक्टेयर है जो कि प्रतिवेदित क्षेत्रफल का 11.63 प्रतिशत है। कृषि योग्य भूमि पर कुल कार्यशील जनसंख्या 1762990 में से 667644 (37.87 प्रतिशत) कृषक के रूप में कार्यरत है तथा कृषि श्रमिकों के रूप में 70447 (4.00 प्रतिशत) कार्य कर रही है।

कृषिगत विकास का परिवहन से सीधा सम्बन्ध है। जहाँ पर परिवहन तंत्र का कम विकास होगा वहाँ पर कृषि विकास कम होगा और जहाँ पर परिवहन तंत्र का अधिक विकास होगा वहाँ पर कृषि विकास अधिक होगा। बहादराबाद विकासखण्ड में 390 किमी लम्बी सड़के हैं वहाँ पर मुख्य फसलों का उत्पादन 5772254 कुन्तल है। न्यूनतम सड़कों की लम्बाई 65 किमी घाट विकासखण्ड में जहाँ पर मुख्य फसलों का उत्पादन 94284 कुन्तल है।

कृषि के विकास में परिवहन उसी प्रकार से भूमिका निभाता है जिस प्रकार से मानव के शरीर में रक्त धमनियाँ या रक्त कोशिकायें भूमिका निभाती है। जिस प्रकार से मानव के उत्तम स्वास्थ्य के लिए उच्च रक्त की संचार व्यवस्था आवश्यक है उसी प्रकार से कृषि विकास के लिए परिवहन व्यवस्था उच्च होनी अति आवश्यक है। मानव के हृदय से शुद्ध रक्त को शरीर के विभिन्न अंगों में पहुँचना तथा अशुद्ध रक्त वापस हृदय में लाना अति आवश्यक है। उसी प्रकार उत्पादित माल को विपणन केन्द्र तक ले जाना तथा अगली फसल बुवाई हेतु बाजार से बीज, उर्वरक व कीटनाशक दवाइओं को ले जाना है, खेत के पास से सड़क मार्ग है तो आसानी से जुताई हेतु हल ट्रैक्टर, आधुनिक मशीनें आदि पहुँच जाते हैं। इसलिए परिवहन सेवा की कृषि विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

मुख्य शब्दः अर्थप्रणाली, प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष, जीविकोपार्जन, कार्यशील, द्वितीयक स्रोत

प्रस्तावना

मानव की मूलभूत आवश्यकता भोजन है। भोजन की प्राप्ति का मुख्य स्रोत प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर आधारित है क्योंकि भारत एक कृषि प्रधान देश है जिसकी कार्यशील जनसंख्या का लगभग 67 प्रतिशत भाग कृषि कार्यों में लगा हुआ है। भारत में कृषि जीविकोपार्जन का साधन नहीं, बल्कि इसको अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी माना जाता है। देश के उद्योग–धन्धे, विदेशी व्यापार, आर्थिक योजनाएँ आदि सभी कृषि पर निर्भर हैं। कृषि विकास में परिवहन की मुख्य भूमिका है।

अध्ययन क्षेत्र

भारतवर्ष के नवोदित 27वें राज्य उत्तराखण्ड के कुमायूँ मण्डल के पूर्व–उत्तर में गढ़वाल मण्डल स्थित है। गढ़वाल मण्डल का अक्षांशीय विस्तार $29^0 27' 30''$ उत्तर से $31^0 28'$ उत्तर तक तथा देशान्तरीय विस्तार $77^0 10'$ पूर्व से $80^0 05'$ पूर्व तक स्थित है। गढ़वाल मण्डल की उत्तरी सीमा हिमांचल प्रदेश तथा चीन से, पश्चिमी सीमा हरियाणा से, पूर्व में कुमायूँ मण्डल अर्थात् पिथौरागढ़, बागेश्वर, अल्मोड़ा, नैनीताल, ऊधमसिंह नगर एवं दक्षिणी सीमा उत्तर प्रदेश राज्य से निर्धारित है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

प्रशासकीय आधार पर गढ़वाल मण्डल को सात जनपदों में उत्तरकाशी, चमोली, रुद्रप्रयाग, टिहरी गढ़वाल, पौड़ी गढ़वाल, देहरादून एवं हरिद्वार में विभाजित किया गया है। गढ़वाल मण्डल का क्षेत्रफल 32448.500 वर्ग किमी है। यह मण्डल 54 विकासखण्डों में विभक्त है। यहाँ पर 16 नगरपालिकायें, 16 नगर पंचायतें, 48 कस्बे, 30 तहसीलें, 3802 ग्राम पंचायतें, 8706 अधिवासित ग्राम हैं। (मानचित्र–1)

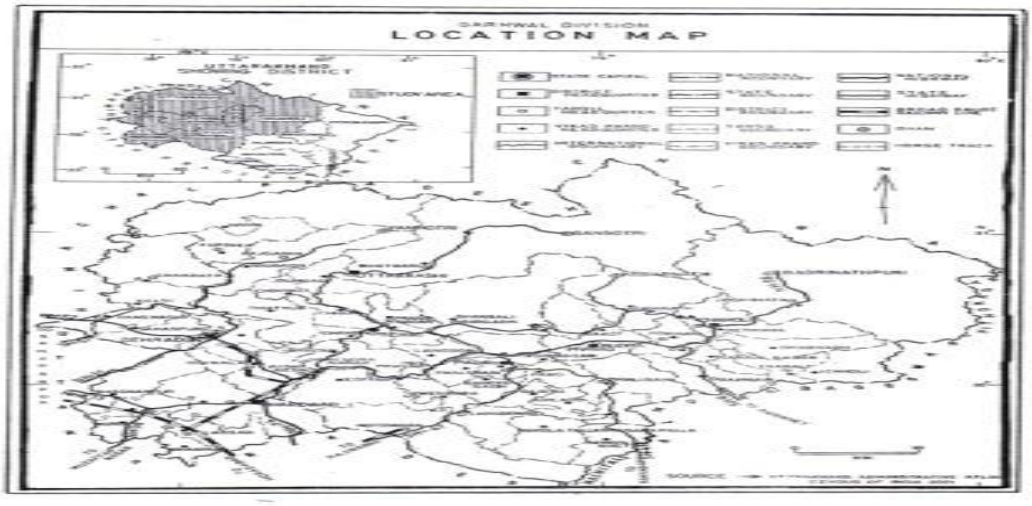

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नांकित उद्देश्य निरूपित किये गये हैं–

1. मण्डल में परिवहन की ऐतिहासिक स्वरूप का ज्ञान करना।
2. मण्डल का संक्षिप्त भौगोलिक ज्ञान प्राप्त करना।
3. मण्डल में सड़कों के स्वरूप उनकी दिशा एवं दशा का अध्ययन करना।
4. मण्डल में परिवहन के मार्ग में पड़ने वाली बाधाओ को ज्ञात कर नियोजन की रूपरेखा प्रस्तुत करना।

विधितंत्र

प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आँकड़ों पर आधारित है। यह आँकड़े जिला अर्थ एवं सांख्यिकीय विभाग एवं परिवहन विभाग से प्राप्त किये गये हैं।

परिकल्पनाएं

किसी भी शोध कार्य के लिए परिकल्पनायें आधार प्रस्तुत करती हैं प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. परिवहन के साधन ग्राम्य विकास की कुंजी है।
2. परिवहन एवं संचार के साधनों के विकास के औद्योगिक विकास को गति मिलती है।
3. यातायात व संचार के साधनों के विकास से आधुनिकता में तीव्रगति से वृद्धि होती है।

भूमि उपयोग

किसी भी स्थान का भूमि उपयोग प्रतिरूप उसकी आर्थिक संरचना मानव व्यवसाय स्वरूप और परिस्थितिकी व्यवस्था पर निर्भर करता है। भूमि प्रकृति प्रदत्त एक महत्त्वपूर्ण संसाधन है और इसका उपयोग जनसंख्या की आर्थिक, सांस्कृतिक क्षमता के पारस्परिक संसाधनों का प्रतिफल है। अध्ययन क्षेत्र की भूमि उपयोग निम्न रूपों में किया जा रहा है–

वन भूमि

अध्ययन क्षेत्र गढ़वाल मण्डल का सम्पूर्ण क्षेत्रफल पर्वतीय भू–भाग है इस कारण से यहाँ पर वन भूमि अधिक पायी जाती है। गढ़वाल मण्डल में कुल प्रतिवेदित क्षेत्र 3403949 वर्ग हेक्टेयर क्षेत्रफल है जिसमें 2279149 (66.96 प्रतिशत) हेक्टेयर पर वन पाये जाते हैं।

परती भूमि

परती भूमि वह कृषि योग्य भूमि कहलाती है जिस पर फसलें उत्पन्न नहीं की जा सकती है बल्कि खेतों को रिक्त छोड़ दिया जाता है। अतः परती भूमि की अधिकता कृषि के पिछड़ेपन का सूचकांक माना जाता है। अध्ययन क्षेत्र में परती भूमि 155346 (4.56 प्रतिशत) वर्ग हेक्टेयर क्षेत्रफल है।

ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि

इस भूमि के अन्तर्गत वह भूमि आती है जो ऊसर एवं बंजर भूमि होती है जहाँ कृषि नहीं की जा सकती है। गढ़वाल मण्डल में कुल प्रतिवेदित भूमि में से 243127 (7.14 प्रतिशत) वर्ग हेक्टेयर क्षेत्रफल है।

कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि

कृषि के अतिरिक्त अन्य कार्यों में प्रयुक्त भूमि से आशय यह है कि कृषि के अतिरिक्त सड़कों, रेलमार्गों, जल क्षेत्रों, अधिवासों एवं औद्योगिक आदि कार्यों में सम्मिलित की जाती है।

अध्ययन क्षेत्र के कुल प्रतिवेदित 3403949 वर्ग हेक्टेयर क्षेत्रफल में से 162129 (4.76 प्रतिशत) वर्ग हेक्टेयर क्षेत्रफल पर कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग में भूमि लायी जाती है।

बाग–बगीचे व उद्यान

बाग–बगीचे व उद्यान पर्वतीय भाग होने के कारण कम पाये जाते हैं। यहाँ पर लोग इनको देखने के

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

लिए आते हैं। अध्ययन क्षेत्र में बाग–बगीचे व उद्यान 168453 (4.95 प्रतिशत) वर्ग हेक्टेयर पर पाये जाते हैं।

कृषि योग्य (शुद्ध बोया गया क्षेत्र) भूमि

शुद्ध बोये गये क्षेत्र से तात्पर्य उस भूमि से है जिस भूमि पर कृषि की फसलें उत्पन्न की जाती हैं जिन क्षेत्रों में सिंचाई, वर्षा, उपजाऊ मृदा एवं तापमान आदि की सुविधाएँ अच्छी होती हैं। वहाँ पर शुद्ध बोये गये क्षेत्र की अधिकता पायी जाती है। अध्ययन क्षेत्र गढ़वाल मण्डल के कुल प्रतिवेदित 3403949 वर्ग हेक्टेयर क्षेत्रफल में से 395745 (11.63 प्रतिशत) वर्ग हेक्टेयर शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल है। विस्तृत अध्ययन हेतु सारणी क्रमांक–1 तथा मानचित्र क्रमांक–2 दृष्टव्य है।

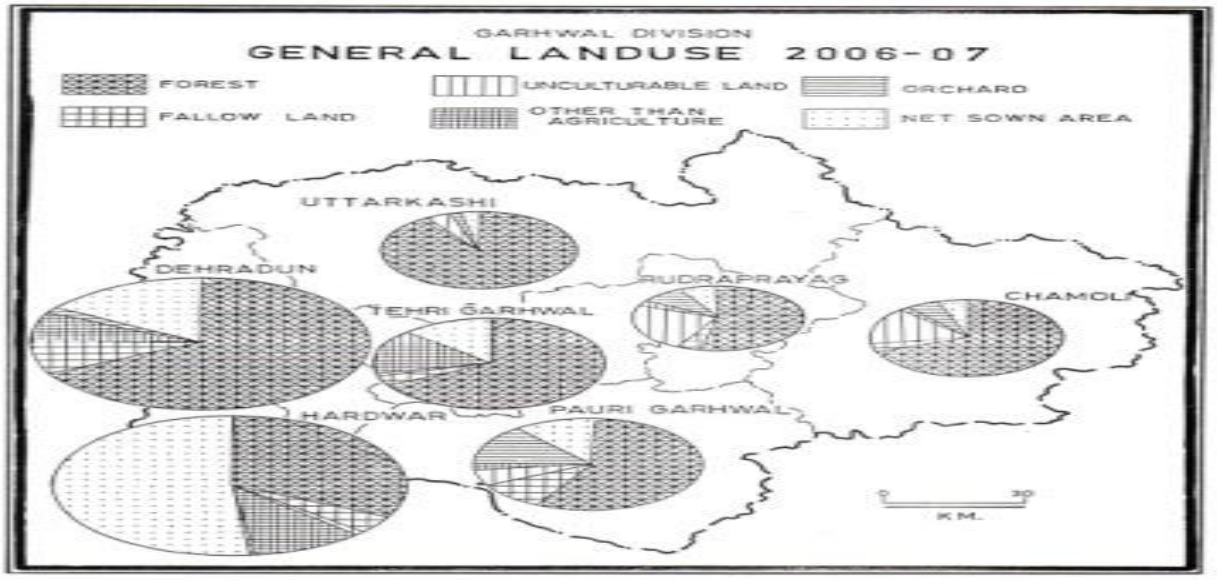

सारणी–1 : गढ़वाल मण्डल में सामान्य भूमि उपयोग (प्रतिशत में), 2006–07

क्रमांक	जनपद का नाम	वन	परती भूमि	ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	बाग–बगीचे की भूमि	शुद्ध बोया गया क्षेत्र
1.	उत्तरकाशी	88.83	06.76	4.63	00.64	01.56	03.58
2.	चमोली	68.17	03.39	15.95	01.75	05.53	05.21
3.	रुद्रप्रयाग	52.21	05.03	23.56	02.68	08.62	07.90
4.	टिहरी गढ़वाल	66.30	03.53	00.99	15.86	00.18	13.14
5.	पौड़ी गढ़वाल	57.24	09.63	05.46	02.38	13.87	11.42
6.	देहरादून	66.96	07.66	00.66	06.65	01.41	16.66
7.	हरिद्वार	31.60	03.89	00.78	10.91	00.23	52.59
गढ़वाल मण्डल		**66.96**	**04.56**	**07.14**	**04.76**	**04.95**	**11.63**
क्षेत्रफल (हे0 में)		**2279149**	**155346**	**243127**	**162129**	**168453**	**395745**

व्यावसायिक संरचना

किसी भौगोलिक क्षेत्र की व्यावसायिक संरचना से आशय है कि उस क्षेत्र विशेष में संसाधनों का उत्पादन करने वाली कार्मिक जनशक्ति का प्रतीक होती है। व्यावसायिक संरचना का अर्थ क्षेत्र में विभिन्न कार्यों में लगी जनसंख्या से होता है जिसको कार्मिक जनसंख्या कहते हैं। कार्मिक जनसंख्या (कर्मकार जनसंख्या) के उस वर्ग को कहते हैं जो आर्थिक दृष्टि से किसी भी उत्पादन में अपनी शारीरिक अथवा मानसिक गतिविधियों के साथ भाग लेता है।

अध्ययन क्षेत्र गढ़वाल मण्डल में व्यावसायिक संरचना के अन्तर्गत कृषक, कृषि श्रमिक, पारिवारिक उद्योग, सीमान्त कर्मकार व अन्य कार्य सम्मिलित किये जाते हैं–

कृषक

कृषक के रूप में अध्ययन क्षेत्र की कुल कार्यशील जनसंख्या 1762990 में से 563477 (31.96 प्रतिशत) जनसंख्या कार्यरत है। गढ़वाल मण्डल में कृषक कार्य में सर्वाधिक कार्यरत 23398 (82.07 प्रतिशत) जनसंख्या उत्तरकाशी जनपद के नौगाँव विकासखण्ड की है तथा कृषक कार्य में न्यूनतम रुद्रप्रयाग के नगरीय क्षेत्र में 1 (0.07 प्रतिशत) जनसंख्या संलग्न है।

कृषि श्रमिक

कृषि श्रमिक का तात्पर्य यह जो लोग कृषित भूमि के मालिक के यहाँ कृषि कार्यों को करते हैं ऐसी कार्यशील जनसंख्या को कृषि श्रमिक कहते हैं। गढ़वाल मण्डल की कुल कार्यशील जनसंख्या में से 70447 (4.00

प्रतिशत) जनसंख्या कृषि श्रमिक के रूप में कार्यरत है; सर्वाधिक कृषि श्रमिक हरिद्वार जनपद के भगवानपुर विकासखण्ड में 13339 (25.54 प्रतिशत) जनसंख्या के रूप में कार्यशील है। सबसे न्यूनतम कृषि श्रमिक जनपद चमोली के दशोली विकासखण्ड में 10 (0.06 प्रतिशत) जनसंख्या कृषि कार्यों में संलग्न है।

पारिवारिक उद्योग

पारिवारिक उद्योग से तात्पर्य सामान्य रूप से घर के सदस्य घर के आँगन या कमरे में जिन उद्योगों को पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से चलते हैं। अध्ययन क्षेत्र की सम्पूर्ण कार्यशील जनसंख्या में से 29145 (1.65 प्रतिशत) जनसंख्या पारिवारिक उद्योगों में कार्यरत है। अध्ययन क्षेत्र में सबसे अधिक चमोली जनपद के जोशीमठ विकासखण्ड में 580 (4.80 प्रतिशत) जनसंख्या तथा हरिद्वार जनपद के वन क्षेत्र की 1249 (27.33 प्रतिशत) जनसंख्या पारिवारिक उद्योगों में कार्यरत है तथा सबसे कम टिहरी गढ़वाल जनपद के जाखणीधार विकासखण्ड की 15 (0.07 प्रतिशत) जनसंख्या पारिवारिक उद्योगों में कार्य कर रही है।

सीमान्त कर्मकार

सीमान्त कर्मकार से आशय उन कार्यकर्ताओं से है जिनको कुछ दिनों को काम करने को मिलता है शेष दिनों में कार्य करने को नहीं मिलता है। अध्ययन क्षेत्र की कुल कार्यशील जनसंख्या की 24.52 प्रतिशत है। अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक सीमान्त कर्मकार पौड़ी गढ़वाल जनपद के जहरीखाल विकासखण्ड में 6801 (64.03 प्रतिशत) सबसे कम सीमान्त कर्मकारों की संख्या टिहरी गढ़वाल के वन्य क्षेत्र में 4 (1.84 प्रतिशत) पायी जाती है।

अन्य कार्यशील

व्यवसाय के इस वर्ग में व्यापार, वाणिज्यक, यातायात, संचार व्यवस्था, सार्वजनिक प्रशासनिक, शैक्षणिक, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा, कल्याण विधि, सामुदायिक पशुपालन, बागवानी, मत्स्य पालन व आखेट आदि में कार्यशील जनसंख्या को शामिल किया जाता है। गढ़वाल मण्डल की कार्यशील 1762990 जनसंख्या में से 667644 (37.87 प्रतिशत) जनसंख्या इस संवर्ग में कार्यरत है। अध्ययन क्षेत्र की सर्वाधिक अन्य कार्यशील जनसंख्या रुद्रप्रयाग टिहरी गढ़वाल जनपदों में नगरीय क्षेत्र में क्रमशः 1316 (93.14 प्रतिशत) तथा 22639 (93.14 प्रतिशत) जनसंख्या मिलती है। सबसे कम जनसंख्या अन्य कार्यों में उत्तरकाशी जनपद के नौगाँव विकासखण्ड में 28510 (8.79 प्रतिशत) है। विस्तृत विवेचन हेतु सारणी क्रमांक–2 एवं मानचित्र–03 को देखें।

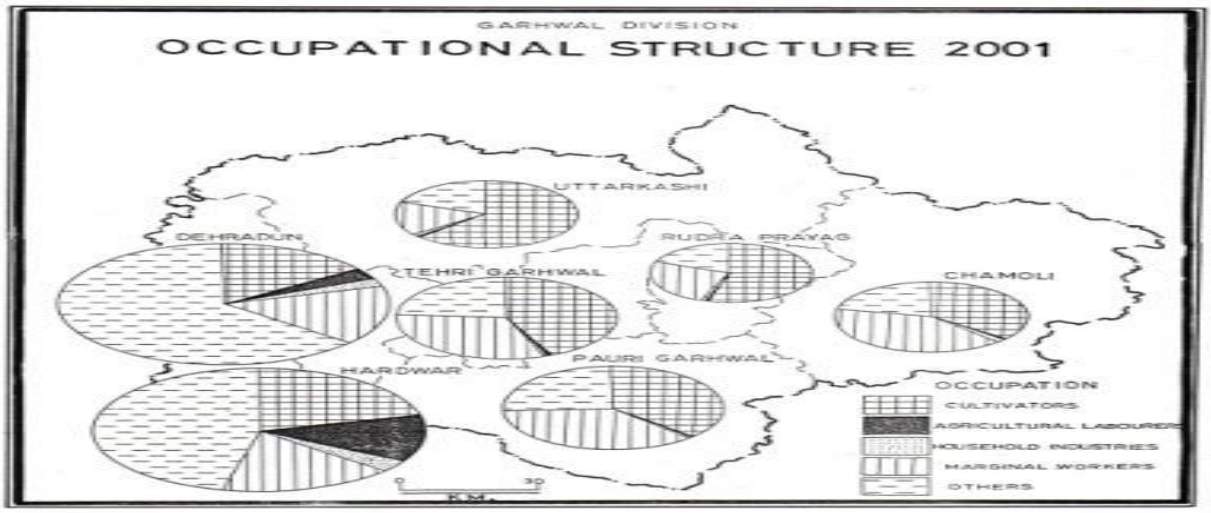

सारणी–2 : गढ़वाल मण्डल में व्यावसायिक संरचना, 2001 (प्रतिशत में)

क्रमांक	जनपद का नाम	कृषक	कृषि श्रमिक	पारिवारिक उद्योग	सीमान्त कर्मकर	अन्य
1.	उत्तरकाशी	63.27	0.69	1.08	15.50	19.46
2.	चमोली	35.68	0.30	1.48	41.17	21.37
3.	रुद्रप्रयाग	54.35	0.21	0.82	25.45	19.17
4.	टिहरी गढ़वाल	43.08	0.57	0.63	31.55	24.17
5.	पौड़ी गढ़वाल	36.83	0.39	0.84	36.40	25.54
6.	देहरादून	15.39	2.94	1.87	15.97	63.83
7.	हरिद्वार	20.74	12.81	3.05	16.86	46.54
गढ़वाल मण्डल		**31.96**	**4.00**	**1.65**	**24.52**	**37.87**

परिवहन का कृषि विकास से सह–सम्बन्ध

कौन–सा देश कितना विकसित है कितना अविकसित है, कितना सभ्य है, कितना असभ्य है इसका अनुमान वहाँ पर उपलब्ध परिवहन सुविधाओं से लगता है। जहाँ परिवहन साधन जितने उन्नत एवं कम व्यय वाले होंगे वहाँ की कृषि, व्यापार, औद्योगिक एवं वाणिज्यक

विकास के साथ–साथ अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध भी उतना ही विकसित और समृद्ध होते हैं। किसी भी देश की अर्थ प्रणाली में कृषि और उद्योग शरीर है तो परिवहन शिरायें एवं धमनियाँ। हमारे यहाँ ऊँटगाड़ी, बैलगाड़ी, घोड़ागाड़ी, मोटरवाहन, रेलगाड़ी, जलयान, वायुयान आदि परिवहन के मुख्य साधन है।

कृषि के विकास में परिवहन उसी प्रकार से भूमिका निभाता है जिस प्रकार से मानव के शरीर में रक्त धमनियाँ या रक्त कोशिकाएं भूमिका निभाती हैं। जिस प्रकार से मानव के उत्तम स्वास्थ्य के लिए उच्च रक्त संचार व्यवस्था आवश्यक है उसी प्रकार से कृषि विकास के लिए परिवहन व्यवस्था उच्च होनी अति आवश्यक है। मानव के हृदय से शुद्ध रक्त को शरीर के विभिन्न अंगों में पहुँचना तथा अशुद्ध रक्त को वापस हृदय में लाना अति आवश्यक है उसी प्रकार उत्पादित माल को मण्डी तक ले जाना तथा अगली फसल की बुवाई हेतु बाजार से बीज, उर्वरक व कीटनाशक दवाओं को ले जाना है खेत के पास से सड़क मार्ग है तो आसानी से जुताई हेतु हल व ट्रैक्टर आदि पहुँच जाते हैं। वर्तमान समय में ट्रैक्टर व आधुनिक मशीनों का प्रयोग किया जा रहा है। यदि सड़क मार्ग पास में नहीं है तो ट्रैक्टर व मशीनें नहीं पहुँच पाती हैं तथा फसलों का उत्तम विकास नहीं हो पाता है। फसल तैयार भी हो जाती है तो उत्पादित माल सड़क मार्ग के अभाव में समय पर मण्डी स्थल तक नहीं पहुँच पाता है। सड़क मार्ग के अभाव से उत्पादित माल कभी–कभी नष्ट हो जाता है। इसलिए परिवहन सेवा की कृषि विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

कृषिगत विकास पर परिवहन का प्रभाव

कृषिगत विकास का परिवहन से सीधा सम्बन्ध है जहाँ पर परिवहन तंत्र अधिक विकसित होगा वहाँ पर कृषि उत्पादन अधिक होता है। अध्ययन क्षेत्र के नारसन विकास खण्ड में मुख्य फसलों का उत्पादन 8447653 कुन्तल है जो कि सर्वाधिक है तथा जहाँ पर सड़कों की लम्बाई 200 किमी है वहीं पर विकासनगर विकासखण्ड में मुख्य फसलों का उत्पादन 659775 कुन्तल है जो कि सबसे न्यूनतम है जहाँ पर सड़कों की लम्बाई 183.79 किमी है। बहादराबाद विकासखण्ड में सर्वाधिक 390 किमी लम्बी सड़कें हैं वहाँ पर मुख्य फसलों का उत्पादन 5772254 कुन्तल है। सबसे कम सड़कों की लम्बाई 55 किमी खानपुर विकासखण्ड में है जहाँ पर मुख्य फसलों का उत्पादन 3044444 कुन्तल है। विस्तृत अध्ययन हेतु सारणी क्रमांक–3 दृष्टव्य है।

सारणी–3 : गढ़वाल मण्डल : कृषिगत विकास पर परिवहन का प्रभाव (अधिकतम)

क्र0सं0	विकासखण्ड	उत्पादन (कुन्तल में)	सड़कों की लम्बाई (किमी)
1.	नारसन	8447653	200
2.	लक्सर	7589758	215
3.	बहादराबाद	5772254	390
4.	भगवानपुर	5389880	261
5.	रुड़की	4324446	256
6.	खानपुर	3044444	055
7.	डोईवाला	1655367	257.38
8.	रायपुर	839120	271.33
9.	सहसपुर	706280	322.11
10.	विकासनगर	659775	183.79

सारणी क्रमांक–4 का अध्ययन करने से परिवहन के विकास एवं कृषिगत विकास का सम्बन्ध ज्ञात होता है। अध्ययन क्षेत्र गढ़वाल मण्डल में न्यूनतम सड़कों की लम्बाई व उत्पादन को देखने पर खिर्सू विकासखण्ड में 195 किमी सड़कों की लम्बाई है वहाँ पर मुख्य फसलों का उत्पादन 75081 कुन्तल है। नैनीडांडा विकासखण्ड में सड़कों की लम्बाई 177 किमी है वहाँ पर मुख्य फसलों का उत्पादन 100837 कुन्तल है। सर्वाधिक सड़कों की लम्बाई पौड़ी विकासखण्ड में 258 किमी है वहाँ पर मुख्य फसलों का उत्पादन 81731 कुन्तल है। न्यूनतम सड़कों की लम्बाई 65.00 किमी थाट विकासखण्ड में है जहाँ पर मुख्य फसलों का उत्पादन 94284 कुन्तल है।

सारणी–4 : गढ़वाल मण्डल : कृषिगत विकास पर परिवहन का प्रभाव (न्यूनतम)

क्र0सं0	विकासखण्ड का नाम	उत्पादन (कुन्तल में)	सड़कों की लम्बाई (किमी में)
1	खिर्सू	75081	195
2	पौड़ी	81731	258
3	पोखड़ा	82922	182
4	मोरी	83897	125
5	थराली	85510	069
6	कोट	90513	220
7	नारायण वंगड़	91874	073
8	घाट	94284	065

9	पुरोला	100676	105
10	नैनीडांडा	100837	177

निष्कर्ष

अध्ययन क्षेत्र के अध्ययन से ज्ञात होता है कि जिस क्षेत्र में परिवहन का विकास उच्च स्तर का है वहाँ पर कृषि का विकास भी उच्च स्तर का है। अतः अध्ययन क्षेत्र में सम्पूर्ण कृषि विकास उच्च स्तर का चाहिए तो परिवहन विकास करना अति आवश्यक है। परिवहन कृषि विकास पर उसी प्रकार से प्रभाव डालता है जिस प्रकार से मानव शरीर पर रक्त शिराओं एवं धमनियों का प्रभाव होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

कामेश्वर नाथ सिंह – परिवहन तंत्र एवं कृषि उत्पादकता का स्तर : पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक प्रतीक अध्ययन, उत्तर भारत का भूगोल पत्रिका अंक 20 संख्या 1 जून 1984, पृष्ठ 24–37

V.K. Srivastava - Habitat and Economy in Upper Son Basin, 1973, P. 4.

Census of India - India census in perspective office of the Registrar General India, Ministry of Home Affairs, New Delhi, 1971, P. 169.

Singh, Harbans - Domestic Animals, New Delhi, 1996, P. 1.

अनन्त मित्तल – ग्रामीण विकास में सड़क, आवास और बिजली की भूमिका, कुरुक्षेत्र, अक्टूबर 2005, पृ0 36–39

जगदीश सरन माथुर – भारतीय सड़क परिवहन व्यवस्था योजना, 1–15 अक्टूबर 1990, पृ0 7.

प्रमोद कुमार सिंह एवं हौशिला प्रसाद, परिवहन तंत्र की कृषि विकास में भूमिका : वाराणसी जनपद (उ0प्र0) का एक प्रतीक अध्ययन, उत्तर भारत भूगोल पत्रिका अंक 31, संख्या 1 जून 1995, पृ0 11–19.

गढ़वाल मण्डल जिला सांख्यिकीय पत्रिकाएं।